ॐ

महारानी पद्मावती ।

अथवा

मेवार कमलिनी ।

(ऐतिहासिक दृश्य रूपक)

श्री राधाकृष्णदास

कृत ।

परम सुहृद करके अपनी
सज्जन सिंह बहादुर
की आज्ञा प्राप्त कर

"साहित्यसुधानिधि" सम्पादक
बाबू देवकीनन्दन खत्री
द्वारा प्रकाशित ।

मुजफ्फरपुर ।

नारायण प्रेस से मुद्रित ।

सन् १८८३ ई० ।

प्रथम बार १०००] [मूल्य ।) आना ।

श्री हरी ।

उपक्रम ।

पूज्य पाद भाई साहब बाबू हरिश्चन्द्र जी भारतेन्दु ने जब 'नीलदेवी' लिखा, मुझसे आज्ञा किया, कि भारतवर्ष में ऐसे ही नाटकों की विशेष आवश्यकता है जो नये लोगों को अपने पूर्व पुरुषों का गौरव स्मरण करावे इतएव तुम कोई नाटक इस चाल का लिखो उनकी आज्ञा पाते ही मैंने "महारानी पद्मावती रूपक" में हाथ लगाया और इसे पूर्ण करके पूज्य भाई साहब को दिखलाया उन्हों ने इसे बहुत पसन्द किया और नाना स्थानों पर शुद्ध करके अपनी सम्मति के साथ स्वर्गवासी श्री महाराणा सज्जन सिंह बहादूर की सेवा में इसे उन के नाम समर्पण करने की आज्ञा प्राप्त करने के लिए भेज दिया परन्तु दुर्भाग्यवश महाराणा साहब के असमय में संसार त्यागी होने से रह गया ।

कुछ काल हुआ मिस्टर कुंवर फतहलाल साहब ने इसे मंगवाया और देख कर अत्यन्त प्रसन्न हुए और श्री महाराणा फतहसिंह बहादूर की सेवा में इसे पेश करके उनके चरणों में समर्पण करने की आज्ञा दिलाई ।

मेरी इच्छा थी कि इसे पृथक उत्तमता पूर्वक छपवा कर प्रकाश करूं परन्तु इसी अवसर में श्री बाबू देवकीनन्दन जी ने "साहित्य सुधानिधि" नामक पत्र प्रकाश किया और इस ग्रंथ को आदर पूर्वक उस में प्रकाशित किया इस लिए आप को हृदय से धन्यवाद देता हूं यद्यपि इस नाटक की रचना प्रणाली सुन्दर नहीं है परन्तु अपने पूर्व पुरुषों की गौरव युक्त गाथा तथा अपने सेवक का परिश्रम समझ कर कदाचित सज्जन जन इसे

सादर ग्रहण कर इस आशा से प्रकाश करने का साहस कि यदि इसकी प्रणाली आप लोगों को रुचेगी और कृपा पूर्वक मुझे उत्साह देंगे तो शिघ्र ही कोई दूसरा नाटक वा उपन्यास लिखने का साहस करूंगा ।

मैं अपने माननीय मित्र कुंवर फतह लाल साहब को कोटिश धन्यवाद देता हूं जिन की कृपा से इस गुण हीन ग्रंथ ने भी सदार्थ कुल नमल दिवाकर के चरणों में समर्पित होने का गौरव पाया ॥

काशी चोखम्भा	}	दासानुदास
श्रीरामनवमी सं० १९५०	}	श्री राधा कृष्ण दास

प्रियवर बाबू राधाकृष्ण दास का बनाया "पद्मावती" नाटक हमने देखा इससे चित्त बहुतही प्रसन्न हुआ इस की रचना प्रणाली तेजस्विनी और आर्य्यधमनी में रुधिर की उत्तेजक है॰ इस ग्रंथ से भारतवर्ष की कीर्ति प्रकाशित होगी॰ हिन्दी भाषा के भंडार का यह भी एक अमूल्य रत्न होगा उज्वल सिसौदिया विमल बंस की यह भी एक लघु यश-पताका है॰ ऐसे ही ग्रंथों का प्रचार अब भारतवर्ष में अपेक्षित है॰ कादर पिया की ठुमरी सुनते सुनते आर्य्यों में क्लीवपना अब चरम सीमा को पहुंच गया॰ अब आर्य्यों को इस बात को याद दिलानी चाहिए, कि उन के पूर्व पुरुष कैसे उदार, कैसे वीर, कैसे धीर दृढ़ अध्यवसायी थे, और उनकी वीर पत्नी पति व्रत धर्म और कुल मर्य्यादा की रक्षा के हेतु अपने अमूल्य जीवन को कैसा तृण सा त्याग देती थीं॰

हरिश्चन्द्र

हमारे प्रेमाधार परमश्रद्धास्पद प्रियवर बाबू श्रीराधाकृष्ण दास जी के पद्मावती नाटक से जो बात है अद्वितीय है॰ इधर आर्य्यवीरों की धर्म निष्ठता, देश वात्सलता सरलचित्तता, इत्यादि यावत् निज सद्गुण एवं आर्य्य रमणी गण का पातिव्रत कार्य्य कौशल्य दृढत्व आदिक सच्चे उदार चरित्र और उधर म्लेच्छाधम वर्ग की स्वार्थ परता तुच्छ मनस्कता, लम्पटता, निर्लज्जता, वञ्चकता प्रभृति घृणित कर्मों के ठीक २ फोटोग्राफ देखके किस सहृदय के हृदय में अलौकिक भाव न उत्पन्न हो जायगे सच तो यह है कि यदि प्रत्येक नगर में प्रति वर्ष ऐसे २ दो चार नाटक लिखे और खेले जाया करैं तो कोई आश्चर्य नहीं कि भारत भूमि फिर से अपना पूर्वगौरव ग्रहण करने लगै भाषा को तो कहना ही क्या है हमारा प्यारा ग्रंथ कर्ता उन पूज्यपाद भारतेन्दु जी का भाई है, जिन के नाम पर नागरी देवी के अहंकार का मूल स्थिर है॰ अहहहह !!! यह अवस्था और यह गुण! यह रचना शक्ति !! हम अपने अभिन्न मित्र की प्रशंसा करके निजगुण कथा पातक के भागी तो नहीं बनना चाहते पर हां यह कहने से नहीं रुक सकते कि हमारे प्रेमाराध्य हरिश्चन्द्र की एक अद्भुत लीला (Miracle) आपने प्रगट करके दिखला दी अतः जितने धन्यवाद और आशिर्वाद आप को दिए जायँ थोडे हैं

ईश्वरावलम्बितमिश्र

(ब्राम्हण सम्पादक कविवर प्रतापनारायण मिश्र)

श्री गणेशाय नमः ।

श्री हरिः ।

महा रानी पद्मावती ।

(ऐतिहासिक दृश्यरूपक)

अथ प्रस्तावना ॥

अद्भुत नाटक रूप सबै संसार बनायो ।
अति विचित्र परलोक यवनिका-तह सरकायो ॥
पात्र जीव सब बने नचावत अपुमन भायो ।
राखि सबै स्वाधीन खेल अद्भुत दिखरायो ॥
माया रूपी नटिन बस जग भूल्यो सब मोह मय ।
मोहत अपुने खेल जग नट नागर जय जयति जय ॥

इतिनान्दी ।

(सूत्र धार का प्रवेश)

सूत्र० (घमकर और चारों ओर देखकर) आज इन सज्जनों

सब सुर बधू गावती ॥ १ ॥

प्रथम अंक।

प्रथम दृश्य।

स्थान चित्तौर का राज दरबार।

(बहुत से राजपूत सरदार प्रधान मंत्री और
महाराणा रत्नसेन बैठे हैं।)

[नेपथ्य में गान]।

सबै मिलि भारत की जय गाओ।
मारि मारि इन दुष्ट यवन गण तुरतीहि दूर भगाओ ॥
करि निष्कंटक या भारत को प्रेम सुधा बरसाओ।
जय जय धर्म जयति जय भारत यहे प्रवाह बहाओ ॥ १ ॥

रतन०। अहा! आज बडे ही आनंद का दिन है, भगवान् एक लिंग जी ने अपने कुल का गौरव रखलिया उन दुष्टों को यह विदित करादिया कि राजपूतों की ओर टेढ़ी दृष्टि से कैसा देखना होताहै, जो इस में मनुष्यत्व का कुछ भी अंश होगा तो फिर कभी क्षत्रियों का सामना करने का साहस न करेगा॥

मंत्री०। महाराज शिक्षा तो ऐसीही दीगई है, कि आजन्म न भूले यदि उन के अभाग्य हों तो कदाचित् भूल जाय।

रतन०। इस में तो संदेह नहीं।

(एक सैनिक का प्रवेश)।

सैनिक०। महाराज की जै। आज के युद्ध में अपनी ही ओर रही शत्रुओं के कई हजार मनुष्य खेतरहे और चार पांच सौ के अनुमान बन्दी भी होगये हैं, अपने चारसौवीर काम आए, जिन में वीर सिंह, धर्म सिंह रामसिंह

प्रभृति कईएक प्रधान वीर गन भी थे।

रतन०। और तो सब अच्छाही हुआ पर खेद इतनाही है कि हमारे हाथ से कई रतन निकल गये।

१ सर्दार। महाराज! कुछ चिंता नहीं, उनके धन्य भाग्य, कि, उन का शरीर अपनी जन्म भूमि के काम आया। आहा! उन्हें साक्षात स्वर्ग लोक प्राप्त हुआ। क्या हम लोगों के भाग्य मे भी यह सुख लिखा है?

रतन० इस में क्या संदेह है? यदि यह पामर शरीर अपनी मात्र भूमि के कुछभी काम आवै तो इससे बढ़कर और पुण्य का क्या फल है? अच्छा जो होना था सो हुआ अब आगे को खूब सावधान रहना चाहिये, क्यों कि ये दुष्ट यवन यों सहज मे नही मान्ने वाले हैं अवश्य फिर उपद्रव मचावेंगे॥

मन्त्री कुछ चिंता नही महाराज! आने दीजिये इस वेर भी यदि भगवान् एक लिंग की कृपा होगी तो वह जाय बैठेगा कि फिर कभी इधर मुंह न करेगा॥

रतन०। ईश्वरेच्छा सर्वपरं प्रबल है, जो होगा वह देखा जायगा आज की विजय के आनंद में उत्सव होना बहुतही आवश्यक है, मंत्री तुम इसकी घोषणा कर दो, और मैं भी थोड़ी देर में अभी आताहूं॥

मन्त्री। जो आज्ञा महाराज की।

(सभों का प्रस्थान))

(नेपथ्यसे)

हाय अब भारत दुरदिन आये।

चारहुं दिशा दीखियत नीचहि यवन म्लेच्छगण छाये।

गसन घरत गन राहु दुष्ट मति गान्धे स्वर कुरिनाक ।
हे भारतहित भारत क्यों अब वाहि गहत नाहि धाये ॥

(प्रथम अङ्क)

(द्वितीय दृश्य) ।

[अलाउद्दीन का शयनागार] ।

[अलाउद्दीन बैठाहै]

अलाउ० । आह। उस रानी की तारीफ सुन्ते, सुन्ते तो नाकों में दम आगया, मेरी समझ में नहीं आता कि क्याकरूं ? किसतरह उसे देखूं और पाऊं ? (कुछ ठहर कर) जो हो मैं इस बात के लिये कसम खाताहूं, कि उस रानी को जरूर जरूर अपना बेगम बनाऊंगा. मुझ को उम्मेद होती है कि बहुत जल्द इस काम में कामयाब हूंगा । क्यों नहीं ? दुनिया में ऐसा कौन सा काम है जो मैं न करसकूं । दरहकीकत मैं दूसरा सिकन्दर हूं और क्या मजाल है जो मेरे सामने कोई चूं भी करसके, तमाम दुनिया के बादशाह मेरे गुलाम हैं मैं जो चाहूं करूं, तब मुझको इतनी फिक्र से क्या काम है ? क्या मकदूर है राणा का जो मेरा हुक्म नमाने, मैं अभी उस को खत लिखताहूं कि अगर वह अपनी भलाई चाहे तो पदमावती मुझे देदे नहीं तो उस को खाक में मिला दूंगा । साथही उसके एक खत रानी को भी लिखना चाहिये, कि तुम हमारे पास चलीआओ हम तुम्हें अपनी बेगम बनावेंगे ।

आखिर तो औरत ही है जरा से लालच से तो खुशहोजायगी, उस के लिये इतने तरद्दुद की कोई जरूरत नहीं है उसे तो बात की बात में लेलूंगा मगर इसबारे में अपने दोस्तों से भी सलाह ले लेनी चाहिये ह्हा, वेलोग क्या जानें जो सलाह देंगे? खुदाय तआला ने हमारे मुकाबले में सभी को अक्ल, दानाई, इल्म मुल्क, जर, हशमत, खूबसूरती, और कुवत वगैरह में कम बनाया है वे बिचारे क्याहैं जो मुझ को राय देंगे? यह बात कभी मुम्किन नहीं है कि पद्मावती मुझे देखे, और मुझपर आशिक नहोजाय। खैर इन बातों की इस वक्त कोई जरूरत नहीं है, दोस्तों से राय पूछ लेनी चाहिये, क्योंकि करना न करना तो अपने हाथ है। मुझे दमभर भी चैन हासिल नहोगी जबतक कि मैं उस माह के चेहरे को न देखूंगा और इस पाक खान्दान को नापाक नकरूंगा॥

॥ दो मुसाहिबों का प्रवेश ॥

अला० क्यों जी तुमलोगों का उस बारे में क्या राय है हम, तुम दोनों को अपना निहायत दोस्त समझ कर यह बात कहते है देखो जिसमें यह बात हरगिज जाहिर नहो॥

दो० हुजूर यह मुम्किन नहीं कि हमलोगों के जरिये से कोई बात जाहिर होसके॥

मला० बेशक-इसमें कोई शक नहीं मगर इत्तफाकन् कह दिया। तुमलोगों के भरोसे हम बडे बड़े कामों

में हाथ डाल देते हैं और बराबर कामयाब होते हैं। तुम लोगों की बदौलत हम इतनी बड़ी बादशाहत करते हैं। यह कभी मुमकिन नहीं कि तुम लोगों से कोई बात ज़ाहिर हो सके। मैंने इत्तिलाअन् कह दिया, इसका कुछ ख़याल न करना॥

दोनों० हज़ूर की इनायत हम गुलामों पर हद से ज़्यादह है गोकि फ़िदवियान् इस लायक नहीं हैं। मगर हुज़ूरही इनायत न फ़रमायेंगे तो और कौन इनायत कर सकता है॥

अला० ख़ैर ये सब बातें रहने दो मतलब की बातें इस वक्त सोचनी चाहिये। तुमलोगों की राय क्या है?

१मु० हुज़ूर की राय मुनासिब है, इस बारे में हज़ूर ने जो राय सोची है वह बहुत ठीक है॥

२मु० हज़ूर की राय बेशक दुरुस्त है॥

अला० इस में कोई शक नहीं, कि, मेरी राय बहुतही उमदह है इस राय के सिवाय भी मेरी राय हमेशाही दुरुस्त होती आई है। पर ताहम तुमलोगों को भी अपनी अपनी मुनासिब राय देनी चाहिये॥

२मु० हुज़ूर ने जो राय सोची है वह उमदह है और हुज़ूर ने उसका अंजाम भी सोचही लिया होगा क्योंकि कोई काम भी बिना अंजाम सोचे न करना चाहिये॥

अला० अजी इस छोटी सी बात में अंजाम सोचने की क्या ज़रूरत है? ऐसी बातें तो रोजही हुआ करती हैं॥

२मु० ख़ुदावन्द निआमत आप बजा फ़रमाते हैं, मगर इस गुलाम की अक्ल नाकिस में तो यह आता है,

कि अंजाम सोचना ज़रूर है आइन्दह हुज़ूर मालिक है ॥

भला० (कुछ क्रोध से) फिर वेही फ़ुज़ूल बातें करते हो, इस में कौन सी बड़ी भारी बात अंजाम सोचने की है, तुम्ही बतलाओ ॥

२सु० (हाथ जोड़ कर) गरीब परवर ज़रा मेरी बात पर गौर कीजिये, अगर राणा और रानी ने आप की दरख़ास्त न क़ुबूल की तो क्या कीजियेगा ॥

भला० (क्रोधसे कुछ मुसकुराकर) तुम निरे बेवकूफ़ हो भला कभी यह मुम्किन है कि वह हमारा हुक्म न माने ॥

२सु० हुज़ूर फ़र्ज़ किया जाय कि अगर न माने तब क्या किया जायगा ॥

भला० (क्रोधसे) जो हाल तुम्हारी की जाती है वही ।
(नेपथ्य की ओर देखकर) कोई है-इधर आओ
(नेपथ्य से) जो हुक्म हुज़ूर ॥

(दो सैनिकों का प्रवेश)।

दोनोंसे० क्या हुक्म होता है?

भला० (२ रे मुसाहिब की ओर देखकर) इस कम्बख़्त को पकड़ कर लेजाओ, इस वक़्त क़ैदख़ाने मे रक्खो, कल सुबह तजवीज की जायगी, इसी वक़्त यह मुनादी करादो कि इस कम्बख़्त का बेअदबी के क़ुसूर म कल सुबह इन्साफ़ कियाजायगा (मुसाहिब से) जनाबे मन् यही हालत,उसकी भी हो जायगी ॥

२सु० (हाथ जोड़कर) हुज़ूर मेरा कुछभी क़ुसूर नहीं है ज़रा मेरी बात सुनलें ॥

भला० चुपरहो चले जाओ, ख़बरदार च न करना ॥

२सु० (स्वगत) खुदाया! इस जुल्म पर ख्याल कर और मलूक को इस जालिम के जुल्म से बचा। उफ़-इस जुल्म। गज़ब खुदा का कमबख़्त बेफ़ायदह मेरी जान—

अला० अब यहाँ इसको खड़ा रक्खा है? फ़ौरन् लेजाओ, हम बदमआश का चेहरा नहीं देखना चाहते। (दोनों सैनिक उसे पकड़ कर खींचते हुए ले जाते हैं) उफ़! इस कमबख़्त ने दिमाग खाली कर दिया। कमबख़्त नालायक निमक हराम इस कमबख़्त की मूछें भी ज्यादह अकल हो गई।

१सु० हुजूर उस कमबख़्त की बातों को सोच सोच कर क्यों रञ्ज उठाते हैं? उस नामाकूल को बहुतही मुनासिब सजा हुई। दर हक़ीक़त उसने निहायत बेजा काम किया॥

अला० खैर, मैं आजही राणा को खत लिखूँगा देखा चाहिये क्या जवाब आता है?

१सु० हुजूर इस नेक काम में देर करने की कोई ज़रूरत नहीं है, आजही ख़त जाना चाहिये, इस वक्त हुजूर को बड़ी तकलीफ़ हुई है जरा आराम फ़रमाइये।

अला० तुम ठीक कहते हो, ख़त आजही जाना चाहिये॥

(पटाक्षेप)

(तृतीय दृश्य)

(राज पथ)

(दो मनुष्यों का प्रवेश)।

१भा० कहो भाई आज कल क्या करते हो। क्या दशा है?

२रा० क्या बतावे, फ़ाको से जान जाती है, कहने से जान

का डर, हाय ईश्वर, कब इस अन्याई बदमाश से हम-
लोगों की जान छुड़ावेगा? उह मति होगई। अब तो
नहीं सही जाती, हाय इस समय कोई ऐसा नहीं
है जो हम लोगों की रक्षा करे।।।
हे भारत भूमि क्या तू अब ऐसी निर्लज हो गई कि इतने
अत्याचार होने पर भी इन पापी यवनों को नहीं भस्म
कर डालती?।

१ला० भाई अबतो हमलोग नहीं बचसक्ते, हमसभों की जान
गई, हाय ऐसा अत्याचार तो कभी कान से भी नहीं
सुना। हमको तो घर जाते लाज लगती है जातेही
लड़के" बाबा बाबा" कह के दौड़ते हैं और कहते
है, बड़ी भूख लगी है कुछ खाने को दो, हाय! उस
समय मारे दुख के प्राणान्त कष्ट होता है। हाय। जिन
बालकों के बोलने से मारे संसार को सुख होता है
उन्हीं बालकों के दीन शब्दों से कलेजा फटा जाता है।।।

२रा० भाई कुछ नपूछो ऐसा नाकों मे दम आगया है कि
कौन दिन ऐसा हो कि हमें मौत आवे (उर्ध्वश्वास)
हा! एक वह दिन था कि हमलोग चैनसे अपना
समय व्यतीत करतेथे, एक दिन यह है कि—(रोता है)।

१ला० उह। अब तो भारतवर्ष की यह दशा नहीं देखी जाती॥

दोनो० "रोवहु सब मिलिकैं आवहु भारत भाई।
हाहा भारत दुर्दशा न देखी जाई॥
सब के पहिले जेहि ईश्वर धन बल दीनो।
सब के पहिले जेहि सभ्य विधाता कीनो॥
सब के पहिले जो रूप रंग रस भीनो।
सब के पहिले विद्याफल जिन गहि लीनो॥

अब सब के पीछे सोई परत लखाई ।
हाहा भारत दुर्दशा न देखी जाई ॥
जहं भये शाक्य हरिश्चंद्र नहुष ययाती ।
जह राम युधिष्ठिर व्यास देव सर्य्याती ॥
जह भीम करण अर्जुन की छटा दिखाती ।
तह रही मूढता कलह अविद्या राती ॥
अब जहं देखहु तह दु:खहि दु:ख दिखाई ।
हा हा भारत दुर्दशा न देखी जाई ॥
लरि बैदिक जैन डुबाई पुस्तक सारी ।
करि कलह बुलाई यवन सैन पुनि भारी ॥
तिन नासी बुद्धिबल विद्याधन ;बहु बारी ।
छाई अब आलस कुमति कलह अंधियारी ॥
भये अध पंगु सब दीन हीन बिलखाई ।
हा हा भारत दुर्दशा न देखी जाई ॥

हे ईश्वर अब बहुत हुआ अब तो सुधलो । हे भारत माता ? अब क्यों नही निर्लज्जता छोडती ? हे भारत वासी महाराज लोगों ! क्यों नही अपने पूर्वजों का स्मरण करते ? हे भारत वासी आर्य्य भ्रातृ गण । अब क्यों नहीं अतिस साहस करते ? अग क्या बाकी है अब और कौन आफत झेलनी है ? इस जीने से क्या मरना अच्छा नहीं है? हा । दुष्ट अनाथहीन तुझपर क्यों नही पत्थर पडते ? तू क्यों नही मरता ? तुझ से संसार में क्या लाभ है? हे ईश्वर। अब शीघ्रही सुधले हे इन्द्रदेव । तुम क्यों नहीं अपने मेघों से ससार को डुबादेते ? क्या तुम्हारा बल उसी समय था कि जब श्री कृष्णचन्द्र भगवान ने तुम्हारा गर्व प्रहार किया था ? आओ इस समय आओ, इस समय कोई तुम्हारा सामना नहीं कर सक्ता शीघ्रही आओ-हाय । हम लोगों की बात कोई भी

नहीं सुनता ॥

२रा० भाई अब क्या करें? कोई सुनताही नहीं, चुप रहो, कहीं कोई आ नजाय, नहीं तो आजही फांसी पर चढ़ाये जायगें॥

१ला० हां ठीक कहते हो, अब चुप रहना चाहिये ऐ--। वह देखो एक मुसल्मान आता है। हाय। सर्व नाश हुआ।

(एक मुसल्मान कर्मचारी का प्रवेश)।

मुस० क्यों नालायको! क्या शोर मचा रहे थे? कम्बख्तो! क्या तुम लोगो को बादशाह का डर नहीं है? बोलो क्या शोर कर रहे थे? बोलता क्यों नहीं? गदहा नालायक।

१ला० सावधान रहो गाली मत दो हम लोग जो चाहते थे बातें करते थे, तुम्हारा क्या? चुप रहो विशेष न बोलो॥

मुस० पाजी सुअर-कहता है चुपरहो-कम्बख्त जानता नहीं कि हुजूर बादशाह सलामत का हुक्म है कि जो हमारे या हमारे दीन के बरखिलाफ बोले उसको मै उसके खान्दान के नेस्तोनाबूद कर डालो। हमलोग उसी हुक्म की रूसे तुम दोनो को मै घर बार के नेस्तोनाबूद करदेंगे। अब भी अच्छा है अगर तुम लोग सौ रूपये मुझे दो और सच्चादीन इसलाम कुबूल करो तो जान बच जाय॥

१ला० चुपरह दुष्ट! हम कभी अपना धर्म न छोड़ेंगे, जान रहै या जाय!

२रा० मरना स्वीकार है पर धर्म छोड़ना स्वीकार नहीं।

मुस० भई हिंदू भी बड़ेही बेवकूफ होते हैं। अपनी जान तो कुछ समझते ही नही! अपनी जान के आगे मजहब कम्बख्त क्या चीज है? मुझे तो कोई सौरूपये दे मैं अभी मजहब छोड़ता हूं। हहह हिंदू लोगो को कुछ भी अ–

वाला नही होती। अच्छा रुपया भी होगा या नहीं ?

दे। रुपया हम लोगों के पास कहा ?

सु॰ तब फिर तुम लोगों को हम न छोड़ेंगे। जुरूर बिल्कुल आज फांसी पड़ेगी।

दोनों॰ आहा। आज बडेही आनद का दिन है। ईश्वर ने हम लोगों की प्रार्थना को सुना। "मूंदहु आंख कतहु" "कछु नाही" जब हमलोग इस ससार में न रहेंगे तो हम लोगों के लिये प्रलयही हो गई धन्य है ईश्वर। हम लोग बड़े आनद से फांसी चढ़ेंगे॥

सु॰ (नेपथ्य की ओर) अजी बरकतुल्लाह-अजी शम्सउद्दीन-जल्द आओ-इन काफिरों को पकड़ो-जल्द पकड़ो-भागने न पावे॥

दे॰ छि मूर्ख। हम लोगों का यह धर्म नहीं है कि धोखा देकर भागे, चलो हम लोग तुम्हारे साथ चलते है। जो चाहो करो। पर केवल खेद इतनाही है, कि इस समय तलवार नही है। नही तो पृथ्वी को इस बीस दुष्टों से इनको काटते चलते। अच्छा नही सही। चलो तुम हम लोगों को लेचलो।

सु॰ (स्वगत) ये लोग बड़े भारी बेवकूफ हैं। (प्रगट) अच्छा चलते जाओ-देखना भागना मत-होशियार॥

दे॰ चलो। (सब जाते है)॥

(इति प्रथमांक)।

॥ अथ द्वितीयांक ॥

॥ प्रथम दृश्य ॥

(स्थान महाराणा रतनसेन का राज भवन)
(महाराणा रतनसेन, महा रानी पद्मावती मंत्री और कुमार अजे सिंह बैठे हैं)।

रतन॰ दुष्ट अलाउद्दीन की दुष्टता तो तुमलोगों ने देखोही, पहिले तो लडा, फिर हारने पर प्यारी पद्मावती को धमकी देकर मागा, और अब, जब कोई बात नचल सकी, तो यह पत्र लिखाहै, अब तुम लोगों की क्या सम्मति है इसकी प्रार्थना को स्वीकार करना या नहीं?

पद्मा॰ हाय! इस अभागनी के लिये आप को बडे दुख सहने पडे! प्राणनाथ। मेरे अपराधों को चमा कीजिये। मैंने आपको बडाही दुःख दिया और अभी नमालूम कितने दुःख दूंगी। हायरे भाग! तूनो चाहे सो करा। (रोदन)॥

रतन॰ प्यारी रोओ मत। तुमने क्या किया? यह सब हमारे कर्मों का फल है (आंसू पोंछ कर) रोओ मत। अब रोने का समय नहीं है। उस दुष्ट ने लिखा है कि हम कुछ नहीं चाहते केवल एक बार चितौरगढ के भीतर आ कर आप से मिलना चाहते हैं, सो अब हमलोगों को यह विचार करना चाहिये कि उसकी इस बिनती को स्वीकार करे वा नही, क्योंकि अब तक किसी दुष्ट यवन का पांव इस महा पवित्र भूमि के ऊपर नहीं आया॥

पद्मा० महाराज। मेरी बुद्धि में तो यही आता है कि उस की इस विनती को मान करके इस झगड़े को मिटाइये॥

रतन० हमारी भी यही सम्मति है।

अजे० और मैं भी इसी को अच्छा समझता हूं।

मन्त्री० मेरी समझ मे भी यही अत्युत्तम सम्मति है।

पद्मा० पर इसका ध्यान रहै कि वह कुछ छल न करे।

रतन० नहीं यह सम्भव नहीं भला ऐसा कभी हो सकता है?

अजे० महाराज। वह कुछ भी न कर सकेगा आप निश्चित रहिये॥

मन्त्री कुमार। आप का कहना बहुत ठीक है तथापि सावधान रहना चाहिये॥

पद्मा० महाराज। ठीक कहते है।

रतन० अच्छा मंत्री! तुम शीघ्र एक पत्र लिख भेजो, कि हमको आपकी प्रार्थना स्वीकार है आप जब चाहें आइये॥

मंत्री० जो आज्ञा॥

रतन० परन्तु सैन्य सज्जित रहनी चाहिये। इन पामरों का स्वप्न में भी विश्वास न करना चाहिये, अच्छा मन्त्री। सेना पति से कहदो कि सावधान रहै॥

मन्त्री० जो आज्ञा॥

रतन० अब नहाने का समय निकट है, मन्त्री देखो। जो कुछ कहा गया है उसका ध्यान रखना। भूलना मत।

मन्त्री० जो आज्ञा। (सब जाते हैं)

(द्वितीय दृश्य)।

(स्थान पद्मावती का उपवेशनागार।)

(विशन्न वदना पद्मावती बैठी है)

पद्मा० हाय। मेरे भाग में क्या लिखा है? क्या मेरी अब यह

दशा हो गई कि मेरे पीछे महाराज को दुःख हो? कोई समय वह था कि मुझे देख कर महाराज का मन प्रफुल्लित होजाता था, अब मुझे देखकर महाराज के कलेजे में आग भडक उठती है। हाय विधना! क्या तूने मुझे इसी लिये सुन्दर बनायाथा कि मेरे पीछे सारे चित्तौर वालों को दुःख हो। हाय चित्तौर! तेरी यह गति मेरेही कारण हुई, सुन्दरी होती नपाजी अलाउद्दीन इस पवित्र भूमि चित्तौर के लेने का विचार करता। हाय प्राण नाथ! तुम को हम ने बडा दुःख दिया। जो तुम यह जानते कि मेरे पीछे तुम्हारी यह दशा होगी तो तुम क्यों मुझे व्याहते? सब मेराही दोष है। मेरे भाग का दोष है। अभागिनी पद्मावती ही इस उपद्रव की जड है। हाय! इतने होने पर भी महाराज का प्रेम इस अभागिनी पर बना है! हाय प्राण नाथ! तुम मेरे ऊपर बडीही कृपा रखते हो पर मैं इस लायक नही हूं। प्राण नाथ! तुम्हारे सुख में मैं कांटा हुई। हाय! यह बात झूठीही मालूम होती है कि भलाई का बदला भलाई है तुमने मेरे साथ जो भलाई कीहै यह उसी का बदलाहै। हे प्राण! तू अभी क्यों नही निकलता? क्या तेरे जीमें यह है कि जब सारा चित्तौर छार हो जायगा तब अपमान के साथ निकले? हाय! ये प्राण बडेही निलज्ज हैं। उह! अब यह नही सहाजाता। अब यह जीवन वृथा है। मैं आत्म घातिनी होऊंगी, निश्चय आत्मघाती होकर चित्तौर के इस कंटक को दूर करूंगी। ऐं! हृदय क्या? क्या, मैं आत्म घातिनी होऊंगी? चित्तौर को इस दशा में फेंक कर आत्मघातिनी! महाराज को इस विपत्ति में

डालकर आत्मघातिनी। कभी नहीं-कभीनहीं-कभीनहीं क्या राजपूतनी होकर मेरा, यही काम है? मै अपने देश की भाचात अग्निमें डालकर आत्मघातिनी होऊ। चौहानवशीयकन्या और सूर्य्यवशीयपतोह्न होकर यहमेरा विचार कि मै इस कायरता के साथ प्राण देकर आत्मघा-तिनी होऊ? छि'। यह मेरा भ्रम है, मैं कभी भी अपने कुल मे कलक नलगाऊगी। देखें रे पाजी तुरक कैसे बहादुर हैं? दुष्ट। दूसरे को स्त्री का सतीत्व विगाडने को इच्छा। पापिष्ट। देखना राजपूत और राजपूतनी कैसे धर्म्म परायन, वीर, और प्रतिज्ञा केपुरे होते हैं। ऐसा स्वप्न मे भी नसोचना कि राजपूतनी धन वा प्राण के डरसे अपना सतीत्व नष्ट करदेगी। ससार मे कौन सी जाति है जो राजपूतो की बराबरी कर सक्ती है? (क्रोध से खडी होजाती है और इधर उधर घूमती है) वह यही चित्तौर है कि जिस के लिये हजारों राजपूत कटगये हैं परंतु स्वाधीनता कभी नही छोडी। दुष्टो। अब यह अच्छी तरह सोच रक्खो कि राजपूत लोगो की जाति, यह चिर स्वाधीन वीर भूमि चित्तौर कभी भी पराधीन नहोगी।

नेपथ्य॰ धन्य देवी धन्य!!

पद्मा॰ हैं। किसने धन्य धन्य कहा है?

(रतन सेन का प्रवेश)।

रतन॰ धन्य देवी! धन्य! तुम्हारा साहस परम प्रशंसनीय है। प्यारी! तुम्हारी सबबातें मैं सुनचुकाहूं। तुम वृथा इतनी सोच करती हो, देखो यह कैसे आनंद कादिन है प्रचु

ने तुम्हारेही से संधिकरना स्वीकार करलिया है। अब किसी बात की चिंता नहीं।

पद्मा० इस में संदेह नही कि उस पाजी ने मेलकी प्रार्थना की है, पर मुझे इन दुष्ट मलेच्छो का विश्वास नही है अकस्मात मेरे चित्त में यह बात आती है कि ये लोग अवश्य ही धोखादें गे, आप निश्चय जानिये कि इस संधि में अवश्यही कुछ नकुछ भीतरी बात और है।

रतन० तुम्हारा यह सोचना वृथाहै तुम इस के लिये कुछ भी चिन्ता न करो। मैं जहातक समझताहूं वह इतना बडा बादशाह होकर कभी भी विश्वास घात नकरैगा।

पद्मा० जो चाहे हो, पर मुझे तो विश्वास नही होता, मैं बहुत चाहतीहूं कि इस मे शका नकरू पर मेरी यह शका मिटतीही नही।

रतन० तुम स्त्री हो इस से तुम्हैं वृथा भय लगता है। चलो रात्रि बहुत बीती, अब सोने चलो व्यर्थ चिंता को छोडो।

पद्मा० जो कहिए पर महाराज! नमालूम क्यों चित्त नही मानता? (दोनो जाते हैं)।

(तृतीय दृश्य)

(स्थान चित्तौर का राज पथ)।

(चार सैनिकों का प्रवेश)।

१से० कहो भाई। कोई नया समाचार भी पाया है?

२से० हां—यह सुनाहै, कि, महाराणा से दुष्ट अलाउद्दीन ने संधि की प्रार्थना कीहै, और केवल उसकी इतनीही इच्छा है कि एकबेर महाराणा का दर्शन करले।

३सै० भाई बात तो अच्छी हुई, सब भागडा थोड़ेही में नि
मट गया।

४सै० अजी निमटा तो अच्छा हुआ, नही तो डर किसको था
राजपूतलोग प्राण रहने तक किसी से नही डरते।
पामर अलाउद्दीन क्या करता? जबतक एक राजपूत भी
जीवित रहेगा तबतक किसकी सामर्थ्य है कि चित्तौर
में पावधरे। इन दुष्टोंने जो संधि करली वह केवल अपने
प्राणरक्षा के लिये, हमलोगो को इस से कुछ भी आनंद
नही है, राजपूत काल से स्वप्न में भी नहीं डरते।
हमलोगों के आनंद का वही दिन होगा कि जिसदिन
हमलोग स्वदेश के लिये और महाराणा के लिये प्राण
देंगे। हमलोग इसको कभी भी आनंद नहीं समझते
कि अपने प्राणरक्षा के लिये संधि को अच्छा समझें।
हम शपथ खा कर कहते हैं कि हम को उसी दिन
आनंद होगा जिस दिन हम अपने देश और अपने प्रभु
और अपनी महारानी के लिये प्राण देंगे।

१सै० भाई वीरसिंह! तुमने बहुतही ठीक कहा। हमलोगो के
जीते किसका साध्य है जो इस पुण्य भूमि में हाथ
लगा सके।

२सै० भ्रातृगण! तुम लोगो का कहना बहुत ठीक है। हमलो
गो के तो दोनों हाथ लड्डू हैं अर्थात् लडाई में लडकर
मरें तो स्वर्ग, और यदि जीत कर जीते फिरें तो यश,
स्वदेश का हित, महा राज का कार्य्य साधन (इत्यादि)।

३सै० यह सब तो ठीकही है, पर संधि होने से हमलोगो को
क्या हानी है? सहजही में स्वदेशरक्षा भी हुई और
अपनी मान मर्य्यादा भी बनी रही।

४सै० परंतु मुझे इन पामर यवनों पर तनिक भी विश्वास नहीं है। ये दुष्ट बडेही विश्वासघातक, झूठे, नोच दुष्ट और क्रूर होते है । मुझे ऐसा सदेह होता है, कि ये दुष्ट अवश्य कुछ नकुछ उपद्रव करेगे, अतएव हमलोगों को प्रत्येक समय सावधान रहना चाहिये ।

१सै० अजी इसमें कौन सी बातहै जिसदिन से यह लडाई प्रारम्भहुई हमलोग तो तबही से सावधान है।

३सै० राम राम । ऐसा कभी भी सम्भव नहीं है, ईश्वर ने मनुष्यों में क्या ऐसे गुणभी दिये है ? कभी भी यह सम्भव नही है।

२सै० भाई ससार के मनुष्य मात्र राजपूतों के ऐसे नहीं है। ईश्वर ने ससार में क्षत्रियों के बराबर सच्चा दृढ प्रतिज्ञ और धार्म्मिक किसी जाति को नहीं बनाया है। और यवनो के ऐसानोच और विश्वास घातक, अतएव यह आवश्यक है कि हम लोग भलीभाति सावधान रहै।

३सै० महाराज ने तो इस विषय में कोई आज्ञा नहीं दीहै । यह निश्चय है, कि महाराज ने इसको भली भांति सोच लियाहै इस से कोई आज्ञानहीं दी ।

४सै० महाराज चाहै आज्ञा दे यानदें, पर हमलोगों को साव धान रहना चाहिये ।

१और २सै० अवश्य—अवश्य ।

३सै० देखो नेपथ्य में यह क्या कोलाहल है ?

(सब उसी ओर देखते हैं)

नेप० सें-। हे सेनिकगण । -महाराज की यह आज्ञा सावधान होकर सुनो "सावधान सबलोग रहहु सब भांति सदाहीं। जागतही सब रहै रनेहुं सोभहि नाहीं" ॥

कसे रहैं काटि रात दिवस सब वीर हमारे।
आप पीठ भी होहिं चार जामे जिन न्यारे॥
तोडे़, गजगत चढे रहैं घोडा बंदूकन।
रहै कुभाही म्यान म्यान प्रतंचे नहिं उतरे छन॥
टारव लोहिंगो कान पामर यवन बहादुर।
आवहि तो चढि सन्मुख कायर कूर सबै गुर॥
दहैं उनको खोद तुरंतहि तिनहि चढाई।
जो पै इक छनहू सनमुख ह्वैं करहि लराई॥
हे वीरगण। सावधान रहो, कल अलाउद्दीन संधि के लिये चित्तौर मे आवेगा, यद्यपि संधि की सम्पूर्णता अवश्य है तथापि सावधान रहना अवश्य है।

४सै० लो अवतो महाराज की आज्ञा भी होगई। चलो हम लोग सावधान होरहैं।

सबसै० चलो। (सभी का प्रस्थान)॥

(पटाक्षेप)

(इति द्वितीयांक)।

[तृतीयांक]

[प्रथम दृश्य]

(स्थान अलाउद्दीन का उपवेशनागार)

(अलाउद्दीन, वजीर और एक मुसाहिब बैठे हैं)

अला० (मुसकराकार) आज बडीही खुशीका दिन है, उस कम्बखत बेवकूफ ने हमारी बात को मान लिया। अब क्या बाकी है? चित्तौर और पद्मावती तो हमारे हाथ में है।

सु० हुजूर बजा फ़रमाते है, इस मे कोई शक नहीं. अब चित्तौर बन्दगाने हुजूर का है, लेकिन इन काफ़िरों मे होशियार रहना जरूरी अमर है, शायद कुछ दगा बाजी न करें।

अला० अल्लाह। अल्लाह। ऐसा कभी ख्वाब में भी न ख्याल करना, मैं राजपूतों को अच्छी तरह जानता हू, ये कभी भी दगाबाज नहीं होते इसी से तो मुझे कामिल यकीन हैं, कि मैंने चित्तौर को दखलही करलिया, इन कम्बख्तों से मुकाबिले में लड कर कोई भी नही जीत सक्ता, इनमे दगाबाजी करनेहो में फतह हैं वल्लाह ये बडे बेवकूफ होते है, भई। इन काफिरों पर खुदा कि मार हैं, लानत हैं इनकी मजहब को और इनके कम्बख्त धर्म को, जो घर में आये हुए दुश्मन को छोड देते हैं।

वजी० खुदावन्द निआमत। बन्दगान आली के मुकाबिले में किस की ताव हैं कि ठहर सके, हुजूर। उन कम्बख्तों के जवाल के अय्याम अनकरीब आ गये है, इसी से उनकी अक्ल ऐसी हो गई। जहा पनाह। क्या मजाल हैं सिकन्दर को जो हुजूर को बराबरी कर सके, हुजूर ने सिक्के पर सिकन्दरसानी खुदवाया, मगर हुजूर का दबदबा सिकन्दर से भी बढा हुआ है। खुदातआला ऐसे बादशाह को ताअबद कायम रक्खें।

सुसा० आमीं ? आमीं।

अला० वजीरने जो कुछ तारीफ मेरी की, वह मेरी सिफतोंसे कहीं घट कर हैं, किसकी मजाल है, कि मेरी पूरी पूरी तारीफ कर सके। अच्छा वजीर। तुम फौजो से कह दो कि आज शाम को चित्तौर के बाहर छिपी रहें, जिस वक्त मैं

पद्मावती । प्राण की पद्मावती । हा । प्राणेश्वरी । अब मुझे बिदा करो । अब तुम्हारा वह स्नेह मय मुख फिर कब देखने में आवेगा ? प्यारी । हम को भी कभी कभीं याद करना । पुत्र अजे सिंह । तुम्हारा यह अभागा पिता अब चला, देखो यह स्मरण रखना कि अपने पिता का बदला इन दुष्ट यवनों से अवश्यही लेना । अवश्य लेना अवश्य लेना, हा चित्तौर वासी प्रजागण । हमने तुमलोगों को बडा कष्ट दिया क्षमा करना, हे सूर्य देव । अपने संतान की यह दशा देखो ॥

अला॰ हह । कैसा भारी वेवकूफ है । अजी इतना रोते क्यों हो ? सीधी सीधी तो बात है, तुम पद्मावती को मुझे देदो और मुसलमान हो जाओ, मै तुम्हीं को चित्तौर का नाजिम बना दूंगा ॥

रतन॰ (अत्यत क्रोध से) चुप रह नाराधम । चुपरह पाजी सूअर (दांत पोसकर) दुष्ट नरपिशाच शस्त्रटे। देख किस को सामर्थ्य है जो मुझ से लड सके ? दुष्ट । ठहर देख ईश्वर तुझको शीघ्रही प्रति फल देताहै, क्या तू मुझ को पिंजरे में बंद करके जानता है कि तू जो चाहेगा करावेगा । ऐसा कदापि नसमझना, क्षत्री लोग प्राण रहते तक नीच पामर म्लेच्छों की आधीनता न स्वीकार करें गे। क्षत्री धर्म सा संसार मे कोई धर्म नहीं है। प्रेत सामने से हटजा तेरा मुख देखने से शरीर क्रोधाग्नि के द्वारा भस्म होने लगता है। विश्वास घातक। देख क्षत्रियों की वीरता, देख क्षत्रियों का धर्म, देख देख हम क्षत्रियों का यह धर्म है कि तुझ को शस्त्र हीन, निर्बल निर्जन पाकर भी सैन्यों ने तुझे न पकडा, न मारा, न कोई

दुखदिया, परतु काल सर्प! तूने अपनी कुटिलता दिखलाई। दुष्ट! तू मेरे सामने से हटजा तू मुखदिखाने योग्य नहीं है। निलज्ज तुझे लज्जा नहीं आती छि! मुझे निस्सहाय पाकर तू ने यह दुष्ट कर्म किया कि मुझ को बंदी बनाया। धन्य राजपूत बीरगण! धन्य तुम्हारी बीरता! धन्य तुम्हारी राज भक्ति! मेरी आज्ञा विना भी तुम लोग थोड़े मे सैनिक मेरे साथ थे। दुष्ट तूने राजपूत बीरों की बीरता देखी? (चारो ओर घूमता है)।

अला॰ बेशक राजपूत लोग बड़े बहादुर होते हैं, मगर मेरी फौज के मुकाबिले में कुछ भी नही है। खैर इससे क्या मतलब अबतो राजपूतो की बहादुरी देखीगई। इस वक्त इसकी अक्ल दुरुस्त नहीं है। दूसरे वक्त देखा जायगा। मैं जाता हूं।

रतन॰ जा नाराधम जा।

(अला उद्दीन जाता है।)

हा! किस आपत्ति में पड़े, इस नारकी पिशाच की दुष्टता से कलेजा दग्ध होता है। उह! अब नही सहा जाता। हा दैव! मैंने कौन अपराध किया था जो तुमने इस भीषण अत्याचार मे डाला। हा कुल देव सूर्य्यनारायण! क्या आप को अपने कुल का यह दारूण दुर्दशा देख कर लज्जा नहीं आती? नहीं नहीं सूर्य्यदेव अब अपने कुल की रक्षा करेंगे। हा हा वह्नो तो देखो वह सूर्य्यनारायण क्रोध मे जलते हुए इधर आते है, ऐसा ज्ञात होता है, कि कदाचित सारे ससार को भस्म करदेंगे, प्रतिक्षण तेज बढताही जाता है, देखो अभी तो सवेरा हुआ है अभी

कौ से सूर्यदेव मे इतना तेज हो जाय गा? निस्सन्देह पृथिवी को जलाने ही के लिये सूर्यदेव चले जाते हैं। आहा! कैसी सुंदर शोभा है, मार्त्तण्ड प्रचण्ड अग्निरूपी तेज से सब जन्तु व्याकुल होकर कैसे भागे जाते हैं और घोर चिकार कर रहे हैं, मानो यह सूचित कराते हैं कि भागो भागो अपनी रक्षा करनी होतो भागो देखो सूर्यनारायण ससैन्य सारेसंसार को भस्म करने के लिये चले जाते हैं धन्य देव धन्य। इस समय आपने हमलोगों पर बड़ी ही कृपा करी। यह देखो यमुना नदी पर सूर्य की किरणें ऐसी चमकती हैं कि मानों सब के पहिले नदी ही जलकर हो गी। (थोड़ी देर आनंद से उन्मत्त की नाई इधर उधर घूमता है) नेपथ्य में दोपहर की नौबत बजती है) चौंक कर, हैं। यह क्या ? यह नौबत कैसी बजती है? क्या अब संसार छोड़ कर जाने का समय निकट देखकर यवनों ने कूच का डंका बजाया अथवा ये मूर्ख अभी तक नहीं समझे कि काल अब समीप है? जोहो, मुझे इससे क्या काम? मेरे लिये तो यह आनन्द का दिन है, (कुछ ठहर कर) नहीं नहीं यह डंका दोपहर का बजा है। एं। क्या दोपहर हो गया? वास्तविक में क्या यह सूर्यनारायण का स्वाभाविक तेज है? क्या यह कालाग्नि नहीं है? हाय। तब तो बड़ा अनर्थ हुआ उह। सूर्यदेव। यह क्या। क्या बहुत काल बीत ने से आप अपने कुल को भूलगये हाय। संसार में अब हमी लोगों के कुल का सहायक कोई भी न रहा। हा दैव। प्यारी पद्मावती। अपने प्राण प्यारे पति की यह दुर्दशा देखो हाय। हमने तुम्हारा वाक्य न माना उसी का यह

फल है। प्यारी-क्षमा-करु। अब नहीं सहाजाता प्राण-प्राण-प्राण-करु। विदा-विदा-विदा (मूर्च्छित होजाता है)

(तृतीयदृश्य)।

(स्थान कारा गार)।

(महाराणा रतनसेन शोक मग्न पड़े हैं)।

रतन० हा मैं अब भी न मरा। हा जन्मभूमि मैं ने तुम्हारी बड़ीही अप्रतिष्ठा की। क्षमा करना। तुम्हारे पुत्रों मे कोई भी ऐसा हतभाग्य न हुआ जैसा कि मैं मैंने अपने कुल मात्र को कलंकित करदिया, भगवान श्री रामचद्रजी के वंश की यह दुर्दशा इसी दुष्ट कुलांगारने की। हा मै स्वय अपने कलंकित मुख को नहीं देखसक्ता तो और कौन देख सकेगा ? मेरे लिये इस लोक औरपरलोक में कहीं भी स्थान नहीं है। हा कुल देव। क्यो नहीं तुम अपने पुत्रों की यह दशा देखकर प्रगट होते और यवनों को विध्वंस करते ? अथवा इस कुलांगारही को क्यों नहीं समुचित दड देते ? हे पिता। सूर्य्यनारायण। अपने कुल की यह दशा देखकर भी आप अपनी क्रोधानल से क्यों नही इस ससार को दग्ध कर देते ? हे कल्कि भगवान। क्या अब भी आप के प्रगट होने में कुछ विलम्ब है ? क्या आप यह घोर कलिकाल और अत्याचार देखकर भी चुप बैठे रहोगे ? हा। कोई मेरी बात नहीं सुनता। हादेव। हमने तुम्हारा क्या बिगाडा था जो तुम हम को इतना सता रहे हो ? जगदीश्वर। कृपा सिंधु भगवान। क्या आप अपने एक दीन भक्त की यह दशा नहीं देखते ?

हा। मेरे ऐसे खोटे भाग्य हैं, कि कोई भी मुझे उत्तर नही देता। हा क्षत्रियगण। आज वह मनुष्य जिसके लिये तुमलोग प्राण देने को प्रस्तुत थे वही तुमलोगों के जीते निराश्रयों और अनाथों की नाई इस भयानक कारागार में अकाल मृत्यु से मराजाता है।।। हे धर्म्म मैं ने आज तक जहांतक बना आप की सेवा की, यदि कोई दोष होगयाहो तो उसे क्षमा कोजियेगा। हा। अब मैं जीकर क्या करूंगा? दुष्ट यवनों के हाथ से मरने से तो आत्महत्याही अच्छी, निश्चय आत्म हत्याही करूंगा।

(नेपथ्य में)।

वृथा प्राण जिनदेहु तुम या दुख सों अकुलाय ।
बिना बिचारे जो करै सो पाछे पछि ताय ॥
दया धरम को मूलहे ताहि न तजहु सुजान ।
निश्चय छूटहु कैद सों कहनो मोरो मान ॥
सोचहु निज कुल धर्म अरु धीरज बुद्धि विवेक ।
दृढता हठ अरुमीरता सोच करहु जिन नेक ॥
तुम्हरे कुल को वाक्य यह देखहु चित्त बिचार ।
“ जोहठ राखै धर्म को तेहि राखै करतार ” ॥
कोऊ वंश ससार मे नहीं जो बोले बैन ।
या पवित्र कुल सामने सब को नीचो नैन ॥
का को है यह सामरथ जो कर गहि किरपान ।
करै तुम्हारे सग में बचे दुष्ट का प्राण ॥
तनिकहु जिन घबराहु तुम ईश्वर को करि ध्यान ।
निहचै रक्षा करहि गो अरु राखै गो मान ॥
आत्म हतन को बात नहीं है तुम्हरे उप युक्त ।

वीर कबहुं नहीं होत है या विचार शी सुज्ञ ॥
कर मे ले किरपान तुम यवनन को करि नास।
यह स्वदेश रचा करहु नासहु सब को त्रास ॥
देत अहै आसीस हम यहै पुकारि पुकारि।
नासन में इन यवन के रच्चहि तुम्हें मुरारि ॥

रतन॰ (चौंक कर) है यह क्या। यह सदुपदेश किसने ऐसे कुसमय में किया है हा। मुझे क्या होगया था? मैं चत्रिय होकर और इन दुष्ट पामर यवनों के डरसे डरूं। छि। यह कोई बात नहीं है, चत्रियों को किस का डर है? साचात यमराज से चत्रि लोग लड सक्ते हैं, भला यह तो कुछ हई नहीं, निश्चय मुझे मारे शोक के बुद्धि भ्रम होगया था। मुझे शस्त्र की क्या आवश्यकता है? हाथही मेरा शस्त्र है, और बज्रसी हथेलिया ढाल, किसकी सामर्थ्य है जो मेरी ओर आंख उठा कर देखसके? कुछ डरनहीं दुष्ट आवे तो सही मैं उसे इसका फल चखा दूंगा। (वीर वेष से इधर उधर घूमता है)।

(नेपथ्य में)।

धन्य! चत्रियकुल धन्य। धन्य महाराणा रतनसेन धन्य। धन्य चत्रियकुल भूषणधन्य। कोई चिंता नहीं। अब अवश्य चत्रियकुल की जय होगी। किसी की सामर्थ्य नहीं है कि तुम्हारे ऐसे वीर पुरुष के रहते चित्तौर को जय करसके। (पटाचेप)।

(इति तृतीयांक)।

(अथ चतुर्थांक) ।

[प्रथम दृश्य ।

[आरण्य] ।

(एक ग़रीब भिखारी का प्रवेश) ।

भिखा० (हाथ से इशारा करता है कि कोई मुझे एक पैसा दे मैं भूखा हूं, और अपने शक्य भर चिल्लाता है) एक मुसलमान खवास का प्रवेश, औ गरीब का उससे पैसा मांगना ।)

खवा० अबे हट कम्बख्त । मेरे पास पैसा कहां धरा है जो मैं तुझे दूं ? चल भागजा नहीं तो अल्लाह की कसम तुझे मारते मारते बेदम करदूंगा ।

भिखा० (फिर उसी तरह पर इंगित करता है और पैर पकड़ता है)

खवा० छोड़ छोड़ पैर छोड़ अल्लाह इस फकीर कम्बख्त ने तो मेरा नाक में दम करदिया अबे छोड़, (छुड़ाने का यत्न करता है और आपस में दोनों लड़ते हैं) ।

खवा० (मनमें) यह कहां की हत्या लगी, मुझे चटपट महारानी से सब वृत्तांत निवेदन करना है और यह दुष्ट मुझे छोड़ता ही नहीं । (प्रगट) देख नहीं छोड़ता तो कैसी सजा देताहूं (बलसे उसे उठा लेताहै और पहिचान कर अलग हो जाता है) अच्छा चलाआ अब मैं पैसा देता हूं (दोनों कुछ दूर जाते हैं और खवास एक जगह खड़ा होकर चारों ओर देखताहै) क्यों जी प्रभुदयाल सिंह, क्या दशा देख आये ? महाराज का शरीर कैसा है ? महाराज क्या करते हैं ?

भिखा॰ भई महाराज की तो बहुतही बुरी दशा है, कभी मूर्छा खाते हैं, कभी आत्मघात का बिचार करते है, कभी वीरता प्रकाशित करते है इत्यादी। परंतु मैं जिस काम के लिये गया था वह ईश्वर के अनुग्रह से और महाराणी के प्रबल प्रताप से सिद्ध होगया। मैंने छिपकर बहुत कुछ कह कर उन के चित्त का ढाढस बधाया, अब वे कभी भी न घबरायगे, परंतु शीघ्रता करनी चाहिये, क्यों कि जहा कोई मुसल्मान आया उपद्रव हुआ॥

खवा॰ क्यो जी प्रगट हो कर क्यों नहीं कहा ?

भिखा॰ उस में दो बात थीं, एकतो मुझे देखकर उनकी शोकानल और भी भडकती, और दूसरे मेरे वाक्यो पर उन को इतना विश्वास न होता जितना कि अब हुआ क्या कि उनको सर्वथैवताणी का सदेह है।

खवा॰ क्यो नहो। भई तुमने बडीही चतुराई का काम किया।

भिखा॰ छि! यह क्या हुआ? यदि महाराणा, महाराणी और जन्म भूमि चित्तौर के लिये धन जन प्राण भी जाय तो कुछ चिंता नही। औरभी आनद हो, भला बताओ तो तुमने क्या २ किया॥

खवा॰ मैंने गुप्त रूप से उन का सब अभि प्राय जान लिया, उन का यह अभिप्राय है, कि, छल से महाराणी को लेलें, और तबतक महाराणा को न मारें, महाराणी को ले कर महाराणा को मार चित्तौर को विध्वंस करे हा! ये दुष्ट बडेही अधम होते हैं। नराधम चित्तौर को विध्वस करेंगे, दुष्टो इस भरोसे मत रहना, जबतक कोई भी चित्तौर का बच्चो जीता रहैगा, चित्तौर को ध्वस न होने देगा। हा! महाराज की यह दशा देखकर हम

लोगों की छाती फटी जाती है क्या कहें महाराणी की आज्ञा शिरोधार्य है नहीं तो हमलोग इन दुष्टों को चिता देते कि चित्तौर का ध्वंस करना कैसा होता है ?

सिखा० इसमें क्या सन्देह है ? दुष्ट पामर यवन । भाई महाराज की वह दीन दशा देखकर मेरा कलेजा फटा जाता था पर क्या करूं सभी देखना पडा ।

खया० भई ! ईश्वर जो कुछ दिखावेगा सब देखना पडेगा, चलो शिघ्रता करें, क्यों कि उधर महाराणी घबरा ती होगी इधर महाराज।

सिखा० हां चलो ।

(दोनो जाते हैं) ।

[द्वितीय दृश्य] ।

[स्थान चित्तौर-राजपथ] ।

(अपनी मा के साथ दो बालकों का प्रवेश) ।

१बा० मा । आज क्यों इतनी धूम धाम मच रही है ? क्यों लोग अपने ढाल तरवार आदि शस्त्रों को सभाल रहे हैं ? क्यों लोग एक साथ हर्षित और दुखित होते हैं ?

स्त्री । बेटा । पाजी मुसलमानों ने महाराणा को छल से पकड लिया है, इसी से लोग दुखित होते हैं, और तुरतही अपने देश के लिये लडाई करनी होगी और उस में प्राण देने होंगे, इस से लोग प्रसन्न है और हर्षित हो रहे हैं ।

२बा० क्यों मा । छल किसे कहते हैं ? क्या छल कोई बडा भारी शस्त्र है ? अथवा कोई बडा पहलवान है ? हमलोगों ने तो आजतक इसका नाम भी नहीं सुना है ।

स्त्री। बेटा तुमलोगों ने इस का नाम कभी न सुना होगा, राजपूत बालक क्यों कभी छल का नाम सुने होंगे? इसकी शिक्षा तो मुसलमानोंही में होती है, धोखा देने को छल कहते है।

१बा० तो क्या मा! ये लोग सब दुष्ट चोर चाइयें हैं? जो महाराज को मिठाई या किसी और वस्तु के देनेका लालच देकर बदो कर लिया? पर मा! महाराज क्यों उनके धोखे मे आगये?

स्त्री। बेटा! ये दुष्ट चोर चाइयें तो हई है, पर महाराज को मिठाई की लालच से नही धोखा दिया महाराज के बडे मित्र बनकर मिल ने को अकेला आया, और जब उसको पहुंचाने के लिये बाहर तक गये तब धोखे से उन्हे कैद कर लिया।

दोनो बा० { क्या मा! ऐसा भी हो सक्ता है? क्या मनुष्य ऐसा कर सक्ता है?

स्त्री। बेटा! तुमलोग क्या जानो? भोले भाले राजपूत बालक, बेटा! राजपूत ऐसो सब जाति नही होती। ये मुसलमान तो और भी दुष्ट होते हैं। तुमलोग इन बातों को पूछ कर क्या करोगे? जाओ खेलो कूदो चैन करो।

दोनों बा० { नही मा! हमलोग भी इन दुष्टो से लडेंगे।

स्त्री। नही बेटा! तुमलोग अभी लडने लायक नहीं हो, तुम लोग इन बातों पर ध्यान मत दो, जाओ अपना खेल कूद देखो।

दोनो बा० { नहीं नहीं हमलोग तो अवश्य पिता के साथ संग्राम क्षेत्र में जायगे, क्या हमलोग क्षत्री नहीं है? क्या हम

लोगों की यह जन्म भूमि नहीं है ? क्या हमलोगों को लड़ने की शक्ति नहीं है ? मा । हम दोनों भाई अकेले दस पांच चोरों को मार लेंगे । मा । हम लोग बाबा के साथ अवश्य जायंगे । देखना मा । हमलोग कैसे वीरता से लड़ते हैं । मा । हमलोगों ने आप के गर्भ से व्यर्थही नहीं जन्म लिया है । हमलोग आप की कोख को कलंकित कदापि नकरेंगे । मा । तुम क्यों डरती हो ? हम लोग रण में जाकर आप का नाम न हसावेंगे ।

स्त्री । साबस बेटा । क्यों नहीं बेटा । तुम कभी नाम न धरा ओगे । तुमलोग आनंद से जाओ और अपना बदला लो । मैं आसीस देती हूं कि तुमलोग वीरता के साथ अपनी जननी जन्मभूमि के लिये अपना सिर कटाओ और हम को आनंदित करो । देखो बेटा । ऐसा न हो कि, लोग हसें और कहैं कि यह कुल ऐसा कायर है कि उस के लड़के आकर लड़ाई में से भाग गये ।

दोनों बा० { नहीं मा ! ऐसा कदापि न होगा । (दोनों आनंद से गाते और नाचते हैं) ।

आनंद को दिन आयस नाचौं ।
काटहि साथ यवन को निज कर रक्त बहै रणमाचौं ॥
देखहिंगे को अहै जगत में जो लरि छचिन जीते ।
कौन बहादुर जग में इन सम को जाने रणरीतें ॥
कहा नाम याही को भुज बल अलाउद्दीन जो कीनो ।
करि मित्रता देइ धोखा पुनि महराजहिं गहि लीनो ॥
कहा जाने रण कहा होत है कपट भक्ति विधि जानै ।
जब इन को सिखवाहिंगे छत्री तब रणको पहिचानै ॥
बाबा के संग जाइ दोउ जन लरिके शत्रुन मारें ।

रहै स्वतन्त्र प्राण तजिवे तक जो प्रन नाहिन हारैं ॥
चलिकै लरिहैं यवन गणनसों काय रहो नहीं भागैं ।
यातो जन्मभूमि की रच्छा या निज प्राणहीं त्यागैं ॥
त्यागि प्राण बकटेहि सबै मिलि नदी रक्त की बहिहैं ।
पै छत्री कुल कबहुं जीवत दास पनो ना करिहैं ॥

॥ पटाक्षेप ॥

॥ तृतीयदृश्य ॥

(महारागी का उपवेशनागार)
(महारागी पद्मावती बैठी है और
मन्त्री हाथ जोडे बैठा है, सामने हाथ
जोडे हुए दो भृत्य खडे हैं)।

म० महारागी ने तो सब वृत्तांत सुनाही है, अब कर्त्तव्य क्या है ?

पद्मा० तुमने क्या सोचा है ?

म० रण।

पद्मा० नहीं नहीं यह समय लडने का नहीं है। इस समय दूसरी ही चाल चलनी चाहिये।

मं० महारागी ने कौन सी चाल सोची ?

पद्मा० सुनो, (कान में कुछ समझाती है।

म० हा ठीक है, नहीतो यदि दुष्ट और कुछ कर बैठे तो फिर महाराज का दर्शन भी होना कठिन होगा।

पद्मा० अच्छा तो फिर देर मत करो।

म० जो आज्ञा, (पत्र लिखता है)।

पद्मा० (आप ही आप) हाय प्राणनाथ! अबतो बडा दुख दिया प्यारे। शिघ्र मिलो, देखो तुम्हारे लिये आज इस क्षत्रिय बाला की क्या दशा होरही है ? तुम्हारे लिये आज कैसा

कलंकित कार्य्य कर रहीहूं ? हा ! क्या हमलोगों का यही अंतिम परिणाम हुआ ? उग्र धर्म का यह फल । क्या धर्म का लोप होगया ? क्या पाखंड पाप की जीत हो गई ? कभी नहीं, ऐसा नहीं हो सक्ता, प्यारे ! शीघ्र ही वह दिन आवेगा, जब हमलोग फिर एकत्रित होंगे परंतु प्यारे। यह दु ख कभी भी न भूलेगी। ईश्वर महाराज की जय करे ।

म० महारणी ! सब प्रस्तुत है ।

पद्मा० अच्छा सुनाओ। (व्यग्रता और औदास्यता नाट्य करती है)

म० जो आज्ञा ।

माननिय महाराजा धिराज । आप ऐसे सम्राट को यह पत्र लिखते हुऐ बड़ाही डर लगता है, परंतु साहस करके क्षमा की प्रार्थना करतीहूं । जिस दिन से वह कोमल सुंदर मूर्त्ति देखी है, उसदिन से ।। साग्नि कलेजे में दहक रही है जी चाहता है कि प्यारे कहकर पुकारूं परन्तु—

पद्मा० ऐं । संसार में कौन है कि जिस को मैं सिवाय प्राणनाथ के प्यारे कहूं ? हाय काल । तू जो चाहे कर । हाय । मेरा तो कलेजा फटा जाता है । (अत्यंत व्यग्रता से)

मं० सावधान महारणी सावधान। आप वीरस्त्री होकर ऐसी व्यग्र होती हैं। जो सिर पर पड़ता है वह सहनाही होता है। सम्भव है कि एक दिन उस नरपिशाच का मुंड आप को भेंट करू । व्यग्र नहोइये सुनिये ॥ मारे भय के नहीं कह सक्ती । ईश्वर वह दिन भी शिघ्र आवेगा कि जब मैं इस अमूल्य रत्न को अपने गले का हार बनाऊंगी मुझ को यह सुनकर कि आप मानो भी हम दासी को दासी

बनाया चाहते है, अत्यंत आनंद हुआ, और मुझे साहस हुआ कि मै अपना दुख निवेदन करु। मैं केवल मात्र यही चाहती हूं, कि एक चित होकर श्री चरण सेवा करूं।

पद्मा० कभी नहीं कभी नहीं।

सं० आप न घबरायं-।

यह मगल कार्य मगलवार के दिन होगा आप उस दिन सब ठीक रखे। मै भी एक राज कुल की कामिनी हूं, और आप भी महाराज कुल चुडामणि हैं इस से हम लोगो के सन्मानार्थ ७०० कुल कामिनीयां मेरी अतिम बिदाई के लिये वहांतक आयगी, उन को कोई न रोके। विशेष प्रेम।

प्रेम भिखारिनी

महारागी इस पर हस्ताक्षर कीजिये।

पद्मा० नहीं मै कभी नही लिखूगी तुम्ही लिख दो।

स० जो आज्ञा। (लिखता है)

(पटाक्षेप)

(इतिचतुर्थांक)

(पंचमांक)

(प्रथमदृश्य)

(अलाउद्दीन का उपवेशनालय)।

(अलाउद्दीन बैठा है)।

अला० (आनद से) आहा! आज बडोही खुशी का दिन है! आज वह परी पैकर तशरीफ लावेंगी, मुझ को जो अपनी खूबसूरती का घमड था वह झूठा न था, क्योंकि पद्मावती ऐसी खूबसूरत औरत मुझ पर फिदा हुई है तो जुरूर

मैं बड़ाही खूबसूरत हूं । वाह ! मैंने भी क्याही उस्तादी का काम किया है । कि चित्तौर भी लिया, इस कमबख़्त काफ़िर को भी मारूंगा, और एक परी पैकर बेगम भी लिलो । (व्यग्रभाव से) मगर इतनी देर क्योंहुई ? नशा तो होगया, मेराजी घबराता है (कुछ सोचकर) वाकई मैं बड़ा अकबलमंद हूं, मगर हाय ! मेरे दिलको एकदम भी तसकीन नहीं । जब मैं गरीबों को निहायत खुश देखता हूं तो बड़ाही दुःख होता है । कैसे गजब कि बात है कि मैं इतना बड़ा बादशाह होकर गमगीन रहूं ? और वे कमबख़्त खुश । खैर, इसनाज़नीनों को मकान जब आखों में घुस जाती है, तो मुझ को होश नहीं रहता । उफ़ ! बड़ी देर लगाई ।

(पद्मावती का प्रवेश) ।

अहा ! जिस के लिये मैं घबरा रहा था वह आगई । गोने आसमान से चांद उतरा चला आता हो. वाह कैसी खूबसूरत है ? आओ प्यारी मेरे नजदीक आओ, बहुत दिनों पर ज्यारत नसीब हुई ! ज़रा बगलगीर होलें । (बढ़ता है) ।

पद्मा० (पीछे हटकर) ज़रा आप ठहरें, इतनी जल्दी नकरें, अब तो मैं आपकी होही चुकी, (स्वगत) हाय । (प्रगट) एक बेर मैं अपने पुराने पति से जन्म भर के लिये विदा होलूं फिर तो जो आप कहेंगे करूंगी ।

अला० खैर क्या मुजायका, जीआ ।　　　　(प्रस्थान)

(द्वितीय दृश्य) ।

(अलाउद्दीन के राज कारागार का बाहिरीभांत) ।

महाराणा रतनसेन और महाराणी पद्मावती खड़े हैं) ।

रतन॰ प्यारी । मैं सोताहूं या जागता ? क्या फिर तुम्हारे दर्शन हुए ? नहीं मुझे भ्रम हुआहै । मेरे भाग्य में उस पूर्णिमा के चंद्रमा की अमल अपूर्व सुधा ज्योति कहां ? निश्चय भ्रमही है । उह । सिर घूमताहै (मूर्छित हो कर गिरा चाहता है और महाराणी पकडती हैं) ।

पद्मा० प्राणेश । यह क्या ? ऐसे क्योंहुए ? यह देखो तुम्हारी प्यारी पद्मावती तुम्हारे मधुरवाक्य सुनने की आशा में व्याकुल होरही है ! ऐसी विपत्ति में बिना धैर्य के कैसे काम चलेगा ? प्राण प्यारे ! आंखें खोलो एक बेर कृपा कटाक्ष से इस दासी को आनंदित करो (अत्यत प्यार से मुंह चूमती है) ॥

रतन० (चैतन्य होकर) ऐं । सुधा किसने बरसाया! किसने नींद से जगाया ? क्या मेरी दशा देख कर सुरबालाओं को दया आई है ? और वे मुझे कृतार्थ करने के लिये यहा पधारी है ? (एका एकी महाराणी को देख कर ऐं । क्या मै सचमुच प्राणेश्वरी की गोद मेंहू ? प्यारी-प्यारी । (अत्यत प्रेम से दोनों मिलते और प्रेमाश्रु बहाते है) ॥

रतन॰ प्यारी । मैंने सुनाथा, कि तुम म्लेच्छाधम के साथ बिवाह करने पर उद्यत हुई हो क्या यह बात सचहै ?

पद्मा० इसकी बडी कहानी है, घर चलकर कहैंगी, आप अभी भाग ने के लिये प्रस्तुत रहें ॥

(अलाउद्दीन का अत्यंत क्रुद्धभाव से प्रवेश)

अला० (गर्जन पूर्वक) यह क्या ? इसके क्या माने ? क्योरे ?

रतन० चुप रह सूअर ।

पद्मावती ताली बजाती है, नेपथ्यमें " धर्म कीजय,

महाराज रतनसेन कीजय-महारानी पद्मावती कीजय-चित्तौर कीजय" कुछ सैनिकों का प्रवेश)

अला० (दांतों के नीचे उंगली दबाकर) यह दगावाजी ।।

पद्मा० पाजी पिशाच । यह दगा बाजी है पापी ? मित्र बनकर महाराज को बंदी कर लिया वह दगाबाजी नहीं ? पर स्त्री पर कुदृष्टि से देखना दगाबाजी नहीं ? बिना दोष हिंदुओं को दंड देना दगाबाजी नहीं ? अपने प्राणपति को बचाना दगाबाजी है ? दुष्ट यह दगाबाजी ? अपने शत्रु से बदला लेना दगाबाजी है ? देख हम हिंदुओं की वीरता, धर्म भीरुता, देख इस समय अपने सहायकों को बुला, अपनी रक्षा कर हम को दंड दे, देखें तेरी बहादुरी। दुख यही है कि तेरे हाथ में शस्त्र नहीं है नहीं तो तुझ से इस प्रश्नों की रक्षा करती, तेरे पापों का फल तुझको देती, यदि तुझमें कुछ भी सामर्थ्य हो, तो आ शस्त्र ले और मुझसे लड़ । देख क्षत्रानियों का सतीत्व भंग करना कैसा होता है ? अरारी किस मुंह से कहना होता है ? दुष्ट ! मैंने इस में कुछ भी अधर्म नहीं किया है, अपने प्राणपति को बचाने के लिये, स्वदेश रक्षा के लिये, और अपने सतीत्व की सहायता के निमित्त कुछ झूठ बोली, तिस पर भी उस पत्र पर मेरे हस्ताक्षर नहीं हैं । यदि मैं आज क्षत्राणी न होती, यदि मेरा यह धर्म न होता तो आजही स्वदेश रक्षा करती, तेरी दुष्टता का प्रतिफल देती, यदि तेरे हाथ में शस्त्र होता, अथवा तू मुझ से ही शस्त्र लेकर लड़ता, तो मैं तेरा सिर काट कर अभी इसी दम सब बदला चुका लेती. (रतनसेन महाराणा से) प्राणनाथ । चलिये, अब विलंब न कीजिये, (सैनिकों से)

तुम लोग यहीं रहो, इसको कहीं मत जाने देना, यहीं पकड़ रखना, जब तक इसको सेना न आजाय, और लड़ाई न होले।

सैनि० जो आज्ञा।

(महाराणा और महाराणी का विद्युत की तरह चला जाना और अल्लाउद्दीन का एक टक उसी ओर देखते रहना)

अला० ऐ क्या यह मैंने ख़ाब देखा ? या सहावा ? मेरी यह बेइज्जती? आह! जिन्दगी भर में यह पहिला मौका है। अफसोस कुछ भी न कर सका? जिस वक्त उसका वह तेजी के साथ निकल जाना खयाल करता हूं। छाती पर सांप लोट जाता है। आग बल उठती है। कलेजा टूक टूक हो जाता है। आंखों के सामने अंधेरा छा जाता है! और अपने तईं संभाल नहीं सकता! क्या हुआ? कुछ परवाह नहीं, मैं इसका बदला लूंगा, तब मेरा नाम अलाउद्दीन जो मैंने उस कमबख्त का झोटा पकड़ कर न घसीटा।

सैनि० दुष्ट! चुप रह—जीभ पकड़ कर खींचलेगी।

(सभी का महा कोलाहल करना और पटाक्षेप)

(नेपथ्य में धर्म की जय महाराजरतनसेन की जय)

(अल्लाहो अकबर इत्यादि का शब्द होना)

(तृतीय दृश्य)।

(अलाउद्दीन का उपवेशनालय)।

(अलाउद्दीन बैठा है)

अला० खैर जो हुआ सो हुआ, अब इसका मैं ऐसा बदला लूंगा कि वे सब भी याद करेंगे, उस कमबख्त को एक अ

दना सिपाही मे न खराब कराया तो मेरा नाम नहीं। कोई है सिपहसालार को बुलाओ।

ने० जो हुक्म बंदगान आली!

(सिपहसालार का प्रवेश)

अला० उन कम्बखत काफिरों को गिरफतार करने के लिये फौज गई?

सिप० हुजूर! उसी वक्त।

अला० कुछ खबर आई।

सप० हुजूर! अभी तक तो कोई खबर नहीं मिली।

अला० आह! इसने बडी भारी जक दी।

सिप० हुजूर! कुछ परवाह नहीं, एक एक से बदला लूंगा, हुजूर का इकबाल ऐसा नहीं है कि कोई बचने पावे।

अला० खैर तुम तयार हो, हम खुद जंग में लडने को चलेंगे।

सिप० हुजूर के तकलीफ फरमाने की कोई जरूरत नहीं है गुलाम जाता है इनशाअल्लाह तआला सुर्खरूई हासिल करके लौटूंगा।

अला० नहीं हम खुद चलेंगे तुमको ज्यादह बोलने की कोई जरूरत नहीं।

सिपा० जो हुक्म। (जाता है)

अला० हाय! मुझे धोखा दे गई! मेरी इतनी होशियारी पर पानी फेर गई। मेरा सिर आज तक किसी ने नीचे नहीं किया था सो इसने मेरी इतनी बेइज्जती की! हाय अफसोस! सद अफसोस! [क्रोध और दुःख नाट्य करता है]

[पटाक्षेप]

(इति पंचमांक)

(षष्ठाङ्क)

(प्रथम दृश्य)

(महाराणी पद्मावती का उपवेशनालय)।

[महाराणी और महाराणा बैठे हैं।]

रतन० प्यारी ! तुमने बडी चतुराई की, यदि तुम न बचाती, तो हमारा प्राण जा चुका था।

पद्मा० प्राणनाथ ! हमने कुछ भी नही किया, केवल ईश्वर ने किया, परन्तु प्यारे। हमे उस दुष्ट को प्यारे लिखने मे बडा दुख हुआ, और वह दुख जन्मभर न भूलू गी।

रतन० खैर जो हुआ सो हुआ, अब आगे की बात करनी चाहिये जो बीती सो बीती, देखो चित्तौर के बाहिर लडाई हो रही है, हमारे मुख्य वीरगण उसी मे लड रहे हैं, देखा चाहिये क्या होता है ?

पद्मा० होना क्या है ? जय, परतु अब चित्तौर बचता नहीं दीखता, क्योंकि वह दुष्ट बेतरह पीछे पडा है।

रतन० इसका कुछ डर नहीं हमारा धर्म रहेगा और वंश भी बना रहेगा, तो फिर चित्तौर स्वतंत्र होगा, फिर धर्म की पताका फहरायगी, हमें लडकर मरने से स्वर्ग होगा, संसार में कोई यह तो न कहेगा, कि रतनसेन कायर था, न लड सका। सब उसी नराधम को धिक्कारैंगे जो दो दो बार हार कर फिर निलज्ज होकर लडता है, देवी का आदेश जो हुआ है वह तो तुमने सुनाही, अब क्या कर्त्तव्य है ?

पद्मा० करना यही है, कि ग्यारह पुत्र और बारहवें आपकी बलि हो, एक पुत्र वंश के लिये बचाया जाय, और मैं बैठ कर तमाशा देखूं। [आखो में आसू भर आते हैं]

रतन॰ प्यारी । यह क्या ? तुम राजपूत बाला होकर ऐसी घबराती हो । ईश्वर ने हम लोगों का पाषाण हृदय बनाया है सभी कुछ सहेंगे, तुम लोगों के लिये पहले जहरव्रत* अवलम्बन किया जायगा फिर हम लोग लड़ेंगे । यह कभी सम्भव नहीं है कि दुष्ट अपवित्र यवन लोग पवित्र राजपूत कुल बालाओं की छाया भी स्पर्श कर सकें ।

पद्मा॰ (आनन्द से] प्राणनाथ । यही तो हमारी भी इच्छा थी, परन्तु आपकी आज्ञा बिना नहीं कह सक्ती थी, तो मैं इसकी आयोजना करू ।

(एक सैनिक का प्रवेश)

सैनि॰ (हाथ जोड़ कर) महाराज की जय । महारानी की जय । लड़ाई में हम लोगों की जीत हुई और मुसल्मान लोग बड़ी भारी क्षति उठाकर भाग गये । परन्तु महाराज वीरसिंह प्रभृति सब बड़े बड़े योधा इस लड़ाई में मारे गये । आधे के लग भग चित्तौर के वीर इस लड़ाई में काम आये । अब सुना है, कि शीघ्र ही अलाउद्दीन फिर चित्तौर पर चढ़ाई करेगा ।

रतन॰ अच्छा कुछ हर्ज नहीं—प्यारी । मैं सैन्य प्रस्तुत करने के

---

* जब जय की कोई आशा नहीं रहती, तब स्त्रिया सम्भ्रम रक्षार्थ इस व्रत का अनुष्ठान किया करती हैं। नगर की सब स्त्रिया नहा धो पवित्र होकर इकट्ठी होती है, और एक गुहा है उस मे आग जलाई जाती है, और बाहिर से लोहे का फाटक बंद कर दिया जाता है एक क्षण में देखते देखते आंखों के सामने हजारों सुंदर और कोमल कुल कामिनिया सतीत्व की रक्षा के निमित्त जल भुन कर क्षार होजाती हैं ।। धन्य राजपूत वीर धर्म !!! उदयपुर राज्यवंश मे कई बार ऐसा हो चुका है ।

लिये जाता हूं, तुम जहर व्रत की तय्यारी कर रखना।

पद्मा० जो आज्ञा।

[महाराणा और सैनिक का प्रस्थान]

(पटाक्षेप)

[द्वितीय दृश्य]

[गोरा का स्थान]

(बादल और गोरा की स्त्री का प्रवेश)

स्त्री। वत्स ! लड़ाई में तुम्हारे पितृव्य ने कैसा काम किया ? हमने सुना है, कि तुमने बड़ा पराक्रम किया।

बाद० माता। हमारे पितृव्य ने यथेष्ट शत्रुओं से बदला लिया, हम केवल उनके अनुगामी थे, उनके हाथ से जो अधमरे छूट गये थे मैंने केवल उन्हीं को मारा पराक्रम कुछ भी न था।

स्त्री। बेटा। तुम धन्य हो, इस समय सारा चित्तौर एक मुंह होकर तुम्हारी प्रशंसा कर रहा है। बारह बरस की अवस्था में तुमने आश्चर्य पराक्रम किया ! परन्तु-हमें सच सच बतलाओ कि प्राणपति ने क्या किया?

बाद० माता। हमने कुछ नहीं किया, जो कुछ किया हमारे पितृव्य ने-किया।

स्त्री। अच्छा तो बेटा-। हमें आनन्द पूर्वक बिदा करो, हमारे प्रभु देर होने से क्रुद्ध होते हैं।

बाद० हमें छोड़ कर कहां जाती हो ? मा।

स्त्री। बेटा। राजपूत होकर ऐसे अधीर होते हो? छि ! अब हमे बिदा करो। (बादल चुप चाप खड़ा रहता है, गोरा की स्त्री चितापर बैठती है, नेपथ्य में महा प्रकाश होता है। (पटाक्षेप)

(तृतीय दृश्य)

(महाराणा रतनसेन की राज सभा, राजपूत लोग बैठे हैं और महाराणा रतनसेन सिंहासन पर विराजमान हैं)।

रतन० वीरगण! चित्तौर की जो दशा है, वह आप लोगों के सामने है, अब क्या कर्त्तव्य है?

१ रा० लड़ाई- हम लोगों के जीते किसकी सामर्थ्य है जो चित्तौर को छू सके?

१ सू० हमारी तलवार की चोट को कौन सहन कर सक्ता है?

२ रा० महाराज! किस नराधम की सामर्थ्य है जो हमारे पैर को भी हिला सके?

रतन० भ्रातृगण। इसमें कुछ भी संदेह नहीं कि हमारे बीर राजपूतों के जीवन समय तक कोई इस पवित्र भूमि की ओर देखने का साहस नहीं कर सक्ता, परन्तु आप लोग जानते हैं कि उन लोगों की सैन्य संख्या बहुत है और हम लोग अब थोड़े रह गये हैं। इसका हमें कुछ भी डर नहीं है पर स्त्रियों के मान रक्षा के लिये 'जहर व्रत करना चाहिये।

सबगा० अवश्य अवश्य अवश्य।

रतन० वीरगण। हमलोगों के लिये आज बड़े ही आनद का दिन है! अपने देश की रक्षा के निमित्त आज हम लोग अपना प्राण देंगे, आज हम लोग अपने धर्म के लिये शत्रु से लड़ेंगे, आज हम लोग धर्म, देश, धन, नारी, और मान का शत्रुओं से बदला चुकावेंगे। मुसलमान दुष्ट मुसलमान- जिसने हमारे धर्म का नाश किया, जिसने हमारे मान का नाश किया, जो हमारी जनम भूमि का विरोधी है जो कुल स्त्रियों का सतीत्व भंग करते हैं, जो

नारियों पर अत्याचार करते है, जो हम लोगों को पूज्यपादा जननी गौ की हिंसा करते है जिनका मुंह देखने से पाप लगता है, उन्हीं के-- उन्हीं मुसलमानों के संहार का आज दिन है, उन्हीं से बदला चुकाने का शुभ मुहूर्त है, भ्रातृगण। उठो देखें किस शस्त्र से राजपूतो को हराते है? देखें किस मुंह से राजपूतों के साथ बोलते हैं? हम लोगों के इन्हीं पैरों के— इन्हीं परम पवित्र पैरों के नीचे महा अपवित्र सहस्रों यवनों के सिर लुड़केंगे। वीरगण! आज तुम लोगों को बदला चुकाने का बहुत अच्छा अवसर मिला है, ये वेही दुष्ट है जिन्हों ने हमे धोखा देकर बंदी किया था, ये वेही दुष्ट हैं जो तुम लोगों की ममता मयी महाराणी का सतीत्व भंग किया चाहते थे, ये वेही नराधम है जो तुम लोगों को दोबेर पीठ दिखा चुके हैं, देखो— यह हाथ खाली न जाय, आज इस सूर्य्य वंश को नाम धराई नहीं देखो- सावधान! सूर्य्यवंश राजपूत कुल और मेवार की प्रतिष्ठा तुम्हीं लोगों के हाथ है सिर नीचे न करना पड़े। वीर गण। तुम्हारे लिये सब दशा में स्वर्ग है, परन्तु स्वदेश रक्षा के लिये हम स्वर्ग को तुच्छ समझते हैं, हम नर्क का रहना अच्छा समझते है, जो स्वदेश हित साधन कर सके।

चलहु वीर उठि तुरत सबै जय ध्वजहिं उड़ाओ।
लेहु म्यान सों खड्ग खींचि रण रंग जमाओ॥
परिकरि कसि कटि उठो धनुष पै धरि शर साधो।
केसरिया बानो सजि सजि रण कंकन बाधो॥
जो आरज गण एक होई निज रूप संभारे।
तजि गृह कुलहि आपनी कुल मर्य्याद विचारे॥
तौ ये कितने नीच कहा इनको बल भारी।

सिंह जगी कहं स्वान टहरि हैं समर मझारी ॥
पदतल द्रग कहं दलहु कीट तृण सरिस यवन चय ।
तनिकहु सक न करहु धर्म जित जयतित निश्चय ॥
आर्य्य वंस को बधन पुण्यजा अधम धर्म में ।
गो भक्षण द्विज श्रुति हिंसन नितजा कुकर्म में ॥
तिनको तुरतहि हतौ मिलैं रण के घर माहीं ।
इन दुष्टन सों पाप किये हू पुण्य सदाहीं ॥
चिउंटिहु पदतल दबे डसत है तुच्छ जंतु इक ।
ये प्रत्यक्ष अरि इनहि उपेक्षै जौन ताहि धिक ॥
धिक तिनकह जे आर्य्य होइ यवनन कह चाहैं ।
धिक तिनकह जो इनसों कछु सम्बन्ध निबाहैं ॥
उठहु बीर तलवार खींचि मारहु घन संगर ॥
लोह लेखनी लिखहु आर्य्यबल यवन हृदय पर ॥
मारू बाजे बजैं कहौ धौंसा घहराहीं ।
उड़हिं पताका शत्रु हृदय लखि लखि थहराहीं ॥
चारण बोलैं आर्य्य सुयश बंदी गुण गावैं ।
छुटहिं तोप घन घोर सबै बंदूक चलावैं ॥
चमकहिं असि भाले दमकहिं ठनकहिं तन बकतर ।
हींसहिं हय झनकहिं रथ गज चिक्करहिं समर थर ॥
छिन महं नासैं आर्य नीच यवनन कहं करि छय ।
कहहु सबै भारत जय भारत जय भारत जय ॥

दोहा।

उठहु उठहु सब बीरगण साजहु सब रण साज ।
लोहे को अभरण सजहु रण में करहु समाज ॥
यवन गणन को रक्त की प्यासी है तलवार ।
आज बुझावहु प्यास वह करि म्लेच्छ कुल छार ॥

जिन तोरी मूरति बहुत छिदुन करत अधर्म ।
नासत है गऊग्रान को करत सदैव कुकर्म ॥
कुल नारिन को करत जो नहा पतिव्रत भंग ।
बल प्रकाश करि दुष्ट गण करत कुकारो संग ॥
तिनही के निध्वंस को मंगल दिन है आज ।
जानो प्रमुदित देखियत सबही आर्य समाज ॥
तनिक विलंब होइ नहि चलहु सबै सानंद ॥
जीति लराई फिरहिगे जीय बढ़ाइ अनन्द ।
केसरिया बानी सजहु वेगि होहु तैयार ॥
चलहु लरहु अरु जय करहु सब मिलि समर मझार ।
सूर्यवंश को मान अब तुम्हरेही है हाथ ।
ऐसो करहु उपाय अब नीचो होइ न माथ ॥
खोलि अस्त्र धाओ सबै जिय बढ़ाइ अतिचाह ।
लरहु मलेच्छन सो सबै छोड़ि फूट अरु डाह ॥
बजहिं धर्म डंका गहकि फहरहिं धर्म निसान ।
बोलहिं सब मिलि धर्म जय बढ़ै धर्म को मान ॥

(महाराणा और सब वीर गण)

(शस्त्र खींच कर और उत्तेजित हो कर) धर्म को जय, भारत की जय, चित्तौर को जय, महाराणा रतनसेन की जय, महारानी पद्मावती की जय, सूर्यवंश की जय, क्षत्रियवंश की जय।

महाराज। जब तक चित्तौर में एक मनुष्य भी जीवित रहेगा तब तक किसी की सामर्थ्य नहीं है, जो यहां प्रवेश कर सके।

(सभी का वीर वेश से धर्म की जय इत्यादि कहते हुए घूमना।)

(पटाक्षेप)

(इति तृतीय दृश्य)

(चतुर्थ दृश्य)

स्थान पहाड की गुहा का बाहिरी प्रान्त गुहा में अग्नि जलती है, बीर वेष मे महाराणा रतनसेन और राजपूत लोग कैसरिया बाना पहिरे निस्तब्ध खड़े हुए गुहा की ओर एक टक देखते हैं। सब के आगे महारागी पदमावती और पीछे पीछे राजपूत बालागण का प्रेम भरी चितवन से राजपूतों को देखती हुए प्रवेश

पदमा० भगिनी गन! आनन्द आज उत्साह मनाओ ।
आर्य धर्म की ध्वजा भेदि नभ मैं फहराओ ॥
कहो कहा यह समय कहा यह अवसर शुभ तम ।
परम धन्य सब भई आजु लहि समयो यह हम ॥
नासमान यह देह न जाने कितीक जनमौं ।
खाइ पीई अरु बिहरि जगत मैं कितीक भरमी ॥
पै ऐसो शुभ समय कहो कब किन जो पायो ।
जनम भूमि अरु सती धर्म हित प्रान गवांयो ॥
जदपि बहुत जग धर्म निगम आगम ने गायो ।
पै नारिहि पति धर्म कोऊ समता नहि पायो ॥
जद्यपि जग में बहुत भांति सम्पत्ति बडाई ।
पै सतीत्व धन सरिस बडाई कोउ न पाई ॥
सो धन सोई धर्म प्राण हु सों प्रिय जो हैं ।
चढो मलेच्छ की सैन आज सोइ नासन को है ॥
ताहि बचावन हेत आज यह शुभ व्रत सान्यौ ।
मिल्यो सुअवसर आज भाग्य धन अपनो मान्यौ ॥
आवहिं सुख सो दुख करैं जोई मन भावै ।

आर्य रमणि गण के छाया हू को नहि पावै ॥
सोइ नारि कुलवन्ति सोई धारमिक धन सोई ।
सोइ जगत मैं सुखी नारि कुल तिलक जो होइ ॥
जाके तन मन प्रान देश के कामहिं आवै ।
जो पाति व्रत रच्छन के हित निज देह गवावै ॥
अहो भगिनि! तुम धन्य लह्यो अनयास जु यह सुख ।
भारत रमनि समाज आज उज्वल कीनो मुख ॥
धिक तिन कों जे प्रान मोह मों मुख को मोरैं ।
धिक धिक तिन के प्रान जोन यह शुभ व्रत तोरैं ॥
परम भाग्य निज मानि परम आनंद मनाओ ।
सती धर्म की मेंड थापि जग मैं जस पाओ ॥
आओ आओ बढी अग्नि मडल मै जावै ।
यह पवित्र तन धूम्र चहुं दिसि नभ मै छावै ॥
चलो चलो सब बेगि पहुच सुर पुर मैं जावैं ।
प्रान नाथ हित तहा बेगि मब सौज बनावैं ॥
आवैगे पिय आज तहा हम आगे सो बढि ।
भेटि अङ्क भरि लेहि कनक सब जाइ हिये काढि ॥
बड भागिनि पिय सग विहरिहैं जग दुख खोई ।
परम कात एकात रहस सुख अन्त न होई ॥
चलो चलो अब तुरत विलम को काम नेकु नहिं ।
सती धर्म जय आर्य धर्म जय भारत जय कहि ॥

[आगे आगे महारानी पदमावती और पीछे पीछे और सब स्त्रियों का अग्निमय गुफा में प्रवेश)

(नेपथ में परम प्रकाश० आकाश में तीन अपसरा एक हाथ में फूल की डाली और दुसरे में फूल की माला लिए दिखलाई पडती है)

अपनरागग० । आओ आओ पद्मावती महरानी। यह जगनाथ कठ पहिरावै धन्य भाग्य निज मानो ।

इति ।

उदयपुर के महाराणाओं की वंशावली ।
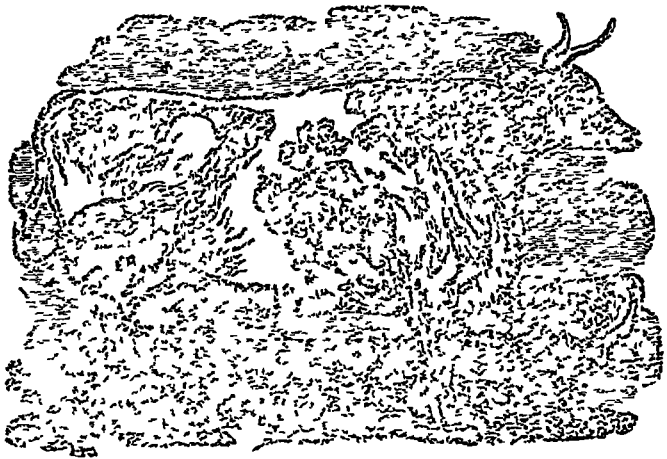
यह वंशावली मुझे उदयपूर के दिवान श्री युत राय पन्ना लाल बहादुर के सुयोग्य पुत्र मित्र वरमकुंवर फतेह लाल जी मेहताद्वारा प्राप्त हुई है इसका प्रकाश करना आवश्यक जानकर धन्यवाद पूर्वक प्रकाश कीजाती है ।

श्रीराधा कृष्णदास ।

दोहा ।

१ २ ३ ४
बापा गुहिलक भोजनृप रावल शील चित्तौर ।

५ ६
काल भोज ताको तनय भर्तरि भट नृप और ॥१॥

७ ८
ओ शच सिंह मही पति समहायक सुततास ।

९ १० ११
ओ खुमान अल्लट सुखद नर वाहन नृप खास ॥२॥

१२ १३ १४
शक्ति कुमारक शुचिवरम प्रभुनर वर्म कृपाल ।

१५ १६ १७
कीर्ति वर्म वैरडआहे वैरी सिंह नृपाल ॥३॥

१८ १९ २०
विजय सिंह और सिंह चौचौड सिंह धरछत्र ।

२१ २२
विक्रम सिंह अरांट कुन क्षेम सिंह सुततत्र ॥४॥

२३ २४
सुतता के सामतसो जाके सिंह कुमार ।

२५ २६ २७
मथन सिंह अरु पद्मसी जैत्र सिंह जुधकार ॥५॥

२८ २९
तेज सिंह ताके तनय समर सिंह महिपाल ।

२९ रावल समर सिंह कहते हैं कि दिल्ली व गदाबु की लड़ाई में पृथ्वी राज के साथ थे बड़े वीर थे ।

३० रावल रत्न सिंह ।

३१ रावल कर्ण सिंह

३२ रावल महाराणा राहुप ।

३३ महाराणा नरपति ।

३४ महाराणा दिनकरण ।

३५ महाराणा यश करण ।

३६ महाराणा नाग पाल ।

३७ महाराणा पूर्णपाल ।

३८ महाराणा पृथ्वी पाल ।

३९ महाराणा भण सिंह ।

४० महाराणा भीम सिंह०१० ।

४१ महाराणा जय सिंह०१० ।

४२ महाराणा गढ लक्ष्मण सिंह ।

४३ महाराणा अरसी ।

४४ महाराणा अजय सिंह ।

४५ महाराणा हमीर सिंह ।

४६ महाराणा क्षेत्र सिंह ।

४७ महाराणा लक्ष सिंह ।

४८ महारा मोकल ।

४९ महाराणा कुभा, गुजरात फ़तह की कुंभलगढ का किला बनाया को तिं लभ बनवाया चित्तौर में ।

५० मयाराणा राय मल ।

५१ महाराणा सागा—बड़े बहादुर थे एक लड़ाई में ८४ घाव लगेथे ।

...राणा रत्न सिंह ।

... महाराणा विक्रम सिंह ।

५४ महाराणा उदय सिंह—उदय पुर बनाया ।

५५ महाराणा प्रताप सिंह०१०—बड़े बीरथ अकबर के साथ हल्दी घाटी पर लड़ाई हुई थी ।

५६ महाराणा अमर सिंह०१० ।

५७ महाराणा कर्ण सिंह ।

५८ महाराणा जगत् सिंह०१०—शाहजहां जब शाहजादा था तब उस समय ये इनके यहां भाग रहा ।

५९ महाराणा राज सिंह०१०—राज समुद्र तालाब बनाया १ करोड़ व्यय हुआ ।

६० महाराणा जय सिंह०२०—जय समुद्र बनाया ९ मील लंबा ५ मील चौड़ा ।

६१ महाराणा अमर सिंह ० २० ।

६२ महाराणा संग्राम सिंह ।

६३ महाराणा जगत सिंह ० २० ।

६४ महाराणा प्रताप सिंह ०२० ।

६५ महाराणा राज सिंह ० २० ।

६६ महाराणा अरि सिंह ० २० ।

६७ महाराणा हमीर सिंह ० २० ।

६८ महाराणा भीम सिंह ० २० ।

६९ महाराणा जवान सिंह ।

७० महाराणा सरदार सिंह ।

७१ महाराणा स्वरूप सिंह ।

७२ महाराणा शम्भु सिंह ।

७३ महाराणा सज्जन सिंह ।

७४ महाराणा फतह सिंह । इति ।

साहित्यसुधानिधि की नियमावली।

यह पत्र ४० पृष्ठों मे प्रकाश हुआ करता है। किसी महीने में पत्र सख्या बढ़ भी जाया करती है।

इसमें क्रमशः प्रसिद्ध कवियों के रचित काव्य-ग्र महात्माओं के रचित सरस पदों का ग्रन्थ, नवीन नाटक, नवीन उपन्यास, प्रसिद्ध लोगों के जीवनचरित्र तथा अनेक वषयों के लेख प्रकाशित हुआ करते हैं। विचित्रता यह है कि उक्त विषयों के स्वतन्त्र ग्रन्थ बनते चले जाते हैं अर्थात भिन्न भिन्न विषयों के जो ग्रन्थ छपते हैं, उनके स्वतन्त्र पत्राङ्क रहा करते हैं, और जब जिस ग्रन्थ की समाप्ति हो जाती है साथही उसका टाइटल पेज भी बाट दिया जाता है कि जिससें ग्राहक लोग इसमे से निकाल के स्वतन्त्र ग्रन्थ की जिल्द बनवालें।

हर तीसरे महीने कोई पुस्तक ग्राहकों को उपहार दी जाती है।

इस पत्र के प्रधान लेखक देवकीनन्दन, अमीरसिंह, राधाकृष्ण दास, जगन्नाथ प्रसाद [रत्नाकर] और कार्तिक प्रसाद हैं इनके अतिरिक्त और भी महाशय लिखा करते हैं।

इस पत्र का सर्वत्र वार्षिक मूल्य २) रुपये, जो महाशय इसके पांच ग्राहक कर देंगे, एक वर्ष तो उन्हें सा० सु० नि० बेदाम मिला करेगा। नमूने की प्रति आध आने का टिकट भेजने पर भेज दी जाती है। बिना पेशगी मूल्य भेजे कोई ग्राहक नहीं बन सकता।

विज्ञापन की छपाई प्रति लाईन तीन आना।

जिन्हें पत्र व्यवहार करना हो वे नीचे लिखे पते से पत्र भेजें।

मैनेजर साहित्य सुधानिधि। मजफ्फरपुर।